Ashok Bapna, Ph.D (Eco.)
Director

ICENS

International Centre for Economics of Non-violence & Sustainability

मई 10, 2010

परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर,

श्री चरणों में सादर नमन,

आज आपके 48वें जन्म दिवस के शुभ अवसर पर ईश्वर से यही मंगल कामना करता हूँ कि आप पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के द्वारा प्रदान किए गए 11वें आचार्य के इस महत्वपूर्ण पद को अपने सुविचारों एवं क्रियाकलापों से गौरवान्वित करें। सौभाग्य से आपको परम पूज्यनीय आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का सर्वाधिक सान्निध्य, संरक्षण एवं पुनीत मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है। सही रूप में आप उनके बताये हुए मानव धर्म एवं सर्वधर्म समभाव को और अधिक सार्थक विस्तार दे पायेंगे, ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास है।

पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की कमी को पूरा करना संभव नहीं है, परन्तु उनके द्वारा बताये हुए रास्ते पर चलना हम सभी का दायित्व है। अंतिम श्वास तक उन्होंने मानव जाति की सेवा ही नहीं की वरन् कई नए आयाम प्रतिस्थापित कर विभिन्न पन्थों व धर्मावलंबियों एवं संकटग्रस्त व्यक्तियों के लिए वे सत्य का सहज मार्ग प्रशस्त कर गए हैं।

मुझे उनके इन्हीं नए आयामों में से एक नये आयाम ''सापेक्ष अर्थशास्त्र'' के साथ नजदीक से कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तथा इस कार्य को पूरा करने का दायित्व उन्होंने दिल्ली में 2005 में मुझे सौंपा था तथा International Centre for Economics of Non-violence & Sustainability (ICENS) पिछले पांच वर्षों से निरन्तर यह प्रयास चलता रहा कि कैसे अर्थशास्त्र के नये स्वरूप को विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया जा सके। आचार्य महाप्रज्ञ जी तथा आपके सान्निध्य में चार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विचार–विमर्श इस विषय पर दिल्ली (2005), उदयपुर (2007), जयपुर (2008) तथा लाडनूँ (2009) में आयोजित हुए थे।

पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के महाप्रयाण से भारत की ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व की एक अपूरणीय क्षति हुई है। वे सिद्धान्त व व्यवहार दोनों में पूर्णतया प्रवीण थे। वे ऐसे सरल व सच्चे संत थे कि उनको संतों के संत (संत शिरोमणि) कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। मैं सदैव उनके लिए कहा करता था 'He is a living legend of our times'. वे आज भी हमारे मध्य विद्यमान हैं और सदैव रहेंगे। वे महाप्रज्ञ ही नहीं, अपितु **'स्थित प्रज्ञ'** थे।

मैंने अपने जीवन में आज तक एक ही ऐसा संत देखा, सुना और पढ़ा है जो 'अभाव आधिक्य' की समस्याओं के प्रति चिन्तित रहा हो, और साथ ही उसके कारणों की सतत खोज करता रहा हो। इनका आध्यात्मिक विश्लेषण करते करते वे 'सापेक्ष अर्थशास्त्र' की नई अवधारणा को केन्द्र में लाने के पक्षधर हो गये थे।

....2

Contact Address: IILM Academy of Higher Learning, 35/95, Sector-10, Kumbha Marg, R.H.B. Colony, Pratap Nagar, Sanganer, Jaipur - 302030
Tel.: 0141-2791150 / 60, Fax: 0141-2794050, Mobile: 93145-09414, E-mail: ashokbapna@rediffmail.com, Website: www.icensindia.com

उन्होंने अपने लेखों व प्रवचनों में 'असमानता' को कम करने पर जो बल दिया और इसके समाधान के लिए जो सुझाव दिये, वे सभी विद्वानों और विचारकों के लिए गहन मनन के योग्य हैं। धर्म व अर्थ के समन्वयन के सम्बन्ध में उनका शोध अपूर्व है। मुझे आशा है कि मुनिश्री अक्षय प्रकाश जी इस विषय पर अपने शोध के माध्यम से आचार्य महाप्रज्ञ के विचारों एवं स्वप्न को साकार कर पायेंगे।

महाप्रयाण से ठीक कुछ समय पूर्व ही आचार्यश्री ने अपनी पुस्तक **"अनेकान्त"** मेरे पास समीक्षा हेतु भिजवायी थी, जिसे मुझे किसी अच्छे अन्तर्राष्ट्रीय विद्वान के पास भिजवानी थी। मैंने इस संबंध में एक पत्र पिछले माह ही दिनांक 17 मार्च 2010 को आचार्यश्री की सेवा में कुछ सुझावों के साथ भेजा था। यही मेरा आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के साथ अंतिम संवाद था। आचार्यश्री अनेकान्तवाद के अन्तर्गत चार पुस्तकों के लेखन की योजना क्रमशः 1) Philosophy of co-existence, 2) Co-existence & Economics, 3) Co-existence & Political System, and 4) Co-existence & Social Order बना चुके थे। उनकी यह योजना उनके जीवनकाल में प्रारम्भ तो हो चुकी थी परन्तु उनके महाप्रयाण से यह पूरी नहीं हो पाई।

यह कभी भी अनुभव नहीं हुआ कि अचानक आचार्यश्री हमारे बीच से चले जायेंगे। आचार्यश्री के इस सपने को पूरा करने का दायित्व हम सबका है। मैं आशा करता हूं कि आपके मार्गदर्शन में आचार्यश्री के इन कार्यों को हम पूरा कर पायेंगे। आचार्यश्री के महाप्रयाण के पश्चात् आप द्वारा प्रसारित प्रथम संदेश जो कल सुबह जयपुर की श्रद्धाजंलि सभा में मुनिवर द्वारा पढ़ कर सुनाया गया, आपकी समर्पित निष्ठा से आचार्यश्री के सपनों को पूरा करने का प्रत्यक्ष प्रयास है।

अभी कुछ दिनों पूर्व ही बजरंग जी जैन दिनांक 26 अप्रैल 2010 से 29 अप्रैल 2010 तक अपने शोध कार्य हेतु मेरे साथ ही थे। वे आचार्यश्री के साथ लम्बा समय बिता कर सरदार शहर आगमन तक उनके साथ ही थे। उन्हीं से आचार्यश्री के कुशल मंगल के समाचार प्राप्त हुये थे। इस बीच मुझे सिमन फ्रेजर विश्वविद्यालय, कनाड़ा से एक निमंत्रण प्राप्त हुआ है, जिसका विषय "कार्डियोवसक्यूलर डिजिज्" है। मुझे सामाजिक–सांस्कृतिक प्रसंगों के ऊपर अपने विचार रखने के लिए आमंत्रित किया गया है। इस कार्य को सम्पादित करने से पूर्व आचार्यश्री को इस विषय की सूचना तथा मार्गदर्शन प्राप्त करने हेतु पत्र लिखने की मेरी जो योजना थी, वह भी अधूरी ही रह गयी।

यह भी आश्चर्य की बात है कि सन् 2020 में सबसे अधिक मृत्यु ह्रदय रोग से भारत में होगी। संभवतया मनुष्य के निर्माण की प्रक्रिया में कोई दोष उत्पन्न हो गया है। आचार्यश्री का मूल मंत्र था, अच्छे मनुष्य का निर्माण किस प्रकार हो और यही मेरे प्रस्तुतीकरण का विषय होगा। आचार्यश्री के दर्शन व आदर्शों को सही प्रकार से मानव जाति के समक्ष रखना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

...3

राजस्थान पत्रिका में प्रकाशित उनका दैनिक स्तम्भ "तत्वबोध' सम्पूर्ण मानव समाज के कल्याण का मार्गदर्शक बना है। इसमें अब तक प्रकाशित विचारों का देश–विदेश की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में अनुवाद प्रकाशित होता रहे और जन समुदाय उसको पढ़ कर अपने जीवन व आचरण में उपयोग करना आरम्भ कर दे तो निःसंदेह एक सुखद, सुन्दर व आनन्दमयी संसार की रचना सुगमता से हो सकती है। उनके संदेश हमें सदैव सन्मार्ग पर चलने को प्रेरित करते रहेंगे। ऐसे विरले संत को बारंबार नमन और ईश्वर से प्रार्थना है कि वे सदैव हमारे हृदय में बसे रहें।

सरदार शहर की पवित्र भूमि में आचार्यश्री का महाप्रयाण हुआ। सरदार शहर अब एक ऐतिहासिक भूमि के रूप में जाना जायेगा। जिस संत ने इसी शहर में 29 जनवरी 1931 को 11 वर्ष की अल्प आयु में दीक्षा ली, जीवन के इस लम्बे सफर को विराम भी इसी शहर में 9 मई 2010 को दिया।

इसी शहर की पवित्र भूमि पर 11वें आचार्य का जन्म 13 मई 1962 अर्थात् आज के दिन हुआ था। 11वें आचार्य जिनको सरदार शहर में ही इस पद पर 10 मई, 2010 को सुशोभित किया गया, को इस शुभ अवसर पर शत–शत प्रणाम। इस शुभ दिन पर ईश्वर से यही मंगलकामना करता हूं कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने अपनी अथक साधना व ज्ञान से तेरापंथ समुदाय की जो विशिष्ट पहचान बनायी है उसे आप, जिन्हें दो महान संतों आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में शिक्षा–दीक्षा का पूर्ण सौभाग्य प्राप्त हुआ है, निश्चित रूप से अणुव्रत आन्दोलन को एक और नयी पहचान दे पायेंगे। आप वास्तव में उन कतिपय संतों में से हैं जिन्हें दो महान संतों का इतने निकट से सान्निध्य प्राप्त हुआ है। यह आप ही का सौभाग्य है और आपके व्यक्तित्व व कृतित्व पर इसकी गहरी छाप है।

मेरा विश्वास है कि आचार्य महाप्रज्ञ के आदर्श हमें जीवन पर्यन्त ऊर्जावान करते रहेंगे और यही प्रेरणा सदैव हमारा मार्ग प्रशस्त करती रहेगी।

परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर, कृपया नए एवं गुरूतम उत्तरदायित्व ग्रहण करने के अवसर पर, मुझ अल्पज्ञ का सादर नमन एवं विनम्र प्रणाम स्वीकार करें और आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के स्वप्न को साकार करने की सतत् चेष्टा में मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद का मुझे सौभाग्य दें।

पुनः सादर नमन सहित,

भवन्निष्ठ,

अशोक बापना

(अशोक बापना)